Gp – पर्व के अंतिम और महानतम दिन पर युहन्ना ७:३७-५२ | 1

– Save This Page as a PDF–

पर्व के अंतिम और महानतम दिन पर

युहन्ना ७:३७-५२

खुदाई: यह देखते हुए कि सुकोट के त्योहार के हर दिन परमेश्वर के प्रावधान के लिए धन्यवाद के प्रतीक के रूप में पानी डाला जाएगा, योचनान ७:३७-३८ में यीशु का कथन विशेष रूप से शक्तिशाली कैसे है? यूहन्ना ७:३७-३८ की तुलना यूहन्ना ४:१३-१४ से करने पर, ऐसे कौन से तरीके हैं जिनसे आत्माएं पानी की तरह काम करती हैं? निकुदेमुस ने येशुआ की रक्षा करने का जोखिम क्यों उठाया? आत्मा कैसे प्राप्त होती है? क्या योचानन ७:५२ में फरीसी सही थे? मसीहा के जन्मस्थान पर भ्रम उसकी पहचान के मुद्दे को और भी अधिक कैसे अस्पष्ट कर देता है? इस अनुच्छेद में ऐसा क्या है जो येशुआ हा-मशियाक को परमेश्वर के वचन के रूप में महिमामंडित करता है?

चिंतन: क्या हाल ही में आपके जीवन में आत्मा का प्रवाह बंद नल के ताज़गी भरे झरने जैसा महसूस हुआ है? आपने अपने जीवन में रुआच के पानी की धारा को मुक्त करने में क्या सहायक पाया है? मसीह के वादों पर विश्वास करने और पवित्र आत्मा की ताज़ा शक्ति का अनुभव करने के बीच आपके लिए क्या संबंध है? आपने हाल ही में मसीहा के बारे में क्या अलग-अलग राय सुनी है? वह भ्रम क्यों है? आपके विश्वास के कारण कब आपका उपहास उड़ाया गया है? आपने क्या किया?

तिश्री के चौदहवें दिन, बूथों का त्योहार शुरू होने से एक दिन पहले, उत्सव के सभी तीर्थयात्री यरूशलेम पहुंचे थे। (Gn – बूथों के पर्व पर संघर्ष)छतों पर, आंगनों में, सड़कों और चौराहों पर, साथ ही सड़कों और बगीचों में, सब्त के दिन की यात्रा के भीतर झोंपड़ी की नाईं ने दाऊद नगर और पड़ोस को एक असामान्य रूप से सुरम्य रूप दिया होगा। यह कैसा दृश्य रहा होगा मैंने २० लाख से अधिक लोगों को बाहर डेरा डालते हुए देखा है।

इस उत्सव की खुशी का एक और गहरा कारण योम

Gp – पर्व के अंतिम और महानतम दिन पर युहन्ना ७:३७-५२ | 2

किप्पुर की क्षमा पर आधारित था। प्रायश्चित का महान दिन (मेरी टिप्पणी देखें निर्गमन जिओ – प्रायश्चित का दिन) सुक्कोट (लैव्यव्यवस्था २३:२७ और ३४) से पांच दिन पहले हुआ था। योम किप्पुर पर इज़राइलियों को एडोनाई के सामने अपने व्यक्तिगत अपराध और पश्चाताप को स्वीकार करना था और टोरा की ६१३ आज्ञाओं को बनाए रखने के लिए खुद को फिर से समर्पित करना था। इसके अलावा, इस दिन दैवीय योजना के अनुसार विशेष बलिदानों द्वारा पूरे राष्ट्र के अपराध का निपटारा किया गया। त्योहार के आखिरी और सबसे महान दिन को महान दिन या होसन्ना रब्बा (युहन्ना ७:३७ए) कहा जाता था। इसलिए, सुक्कोट का सातवाँ दिन सप्ताह का चरमोत्कर्ष था और शबात के रूप में मनाया जाता था, संभवतः वादा किए गए देश में प्रवेश की याद में। (देखें At– आठवें दिन, जब उसका खतना करने का समय आया, तो उसका नाम येशुआ रखा गया)।

एक मंदिर अनुष्ठान जो ईसा मसीह के जीवन के दौरान सुक्कोट के त्योहार के लिए निश्चित था, उसमें शोएवा जुलूस शामिल था, जिसका अर्थ है पानी खींचने की रस्म। टोरा में मोशे द्वारा इस बारे में कुछ भी नहीं लिखा गया है; हालाँकि, यह प्रथा यशायाह भविष्यवक्ता के शब्दों पर आधारित थी जब उसने लिखा था: हे प्रभु, मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ, क्योंकि यद्यपि तू मुझ पर क्रोधित था, परन्तु अब तेरा क्रोध दूर हो गया है; और तुम मुझे शान्ति दे रहे हो। “देखना! ईश्वर ही मेरा उद्धार है. मैं आश्वस्त और निडर हूं; क्योंकि यहोवा मेरा बल और मेरा गीत है, और वही मेरा उद्धार ठहरा है!” तब तू आनन्दपूर्वक उद्धार के सोतों से जल भरेगा। उस दिन तुम कहोगे, “प्रभु को धन्यवाद दो! उसके नाम से पुकारें! उसके कामों को देश देश के लोगों में प्रगट करो, उसका नाम कितना ऊंचा है, इसका प्रचार करो। प्रभु के लिए गाओ, क्योंकि उसने विजय प्राप्त की है – यह बात सारी पृथ्वी पर प्रगट की जा रही है। हे सिय्योन में रहनेवालो, जयजयकार करो और आनन्द से गाओ; क्योंकि इस्राएल का पवित्र परमेश्वर अपनी बड़ाई में तुम्हारे साथ है” (यशायाह १२:१-५ सीजेबी)।

मंदिर से सिलोम के तालाब तक: सुबह की होमबलि
के समय, एक प्रमुख याजक, लोगों की उत्साही भीड़ के साथ, निकानोर फाटक के माध्यम से अभयारण्य में पवित्र स्थान से एक सोने का घड़ा ले गया (देखें एनबी१ – निकानोर फाटक) महिलाओं के दरबार में (देखें एनसी२ – महिलाओं का दरबार), फिर अन्यजातियों

Gp – पर्व के अंतिम और महानतम दिन पर युहन्ना ७:३७-५२ | 3

के दरबार में, और दक्षिणी डबल फाटक के मुहाने से नीचे (देखें एनजी२ – डबल फाटक मुँह का मार्ग), सुरंग के माध्यम से (देखें एनजी१ – दक्षिणी डबल फाटक के माध्यम से प्रवेश) और सिलोम के पूल की सीढ़ियों वाली एक सड़क के नीचे, जो भवन का पर्वत के ठीक नीचे शहर के दक्षिणी छोर पर स्थित था (देखें एनई1 – सिलोम तालाब का सीढ़ियाँ)। संगीत की ध्वनि के साथ जुलूस भीड़भाड़ वाले ओपेल से होते हुए सिलोम के बिल्कुल किनारे तक, टायरोपोयोन घाटी के किनारे तक चला गया, जहां यह किड्रोन घाटी में विलीन हो जाता है। छतें उस स्थान को चिह्नित करती हैं जहां उन बगीचों को जीवित झरने से सींचा जाता था, जो रोजेल झरने द्वारा किंग्स गार्डन से लेकर टायरोपोयोन के प्रवेश द्वार तक फैला हुआ था। यहां तथाकथित “सोते के फाटक ” था और अतिप्रवाह से सिलोम नामक तालाब भर जाता था। जब शोएवा का जुलूस तालाब तक पहुंच गया, तो मुख्य याजक ने अपने सोने के घड़े को मोक्ष के झरनों से दो पिंट से थोड़ा अधिक पानी से भर दिया (यशायाह १२:३ सीजेबी)।

सिलोम के तालाब से वापस मन्दिर तक: फिर उसके
साथ आने वाली भीड़ के साथ, प्रक्रिया को उलट दिया गया। मुख्य याजक उन्हें भवन का पर्वत के दक्षिण-पश्चिम कोने तक उन्हीं सीढ़ियों से वापस ले जाएगा। बड़ी भीड़ डबल फाटक के मुहाने से होते हुए अन्यजातियों के दरबार में वापस आ गई। फिर वे पश्चिमी हुल्दा फाटक के माध्यम से अपना रास्ता घुमाएंगे, चेल की सीढ़ियों से ऊपर जाएंगे, अभयारण्य के दक्षिणी हिस्से के ठीक पीछे मुड़ेंगे, और पूर्वी फाटक से होते हुए महिलाओं के दरबार में जाएंगे। इसके बाद लोग निकानोर फाटक (एनबी१ – निकानोर फाटक) तक पंद्रह सीढ़ियाँ चढ़ेंगे। इन चरणों को जानबूझकर भजन की पुस्तक में आरोहण के पंद्रह गीतों के प्रतीकात्मक विवरण के रूप में बनाया गया था। वे ऐसे गीत थे जो लोगों द्वारा येरुशलायिम की तीन महान चढ़ाई के दौरान बांसुरी की संगत के साथ गाए गए थे – पेसाच, वीक्स और सुकोट के त्योहारों को ध्यान में रखते हुए (निर्गमन २३:१७)। आरोहण के ये गीत मंदिर में परमेश्वर के लोगों की ईश्वर और एक-दूसरे के साथ सुखद सहभागिता को दर्शाते हैं।

Gp – पर्व के अंतिम और महानतम दिन पर युहन्ना ७:३७-५२ | 4



पहले चरण में वे भजन १२० गाएंगे, दूसरे चरण
में वे भजन १२१ गाएंगे, तीसरे चरण में वे भजन १२२ गाएंगे, चौथे चरण में वे भजन १२३ गाएंगे, चरण एक से पंद्रह तक सभी रास्ते और भजन १२० से भजन १३४ तक। खड़े होने की जगह सीमित थी क्योंकि लाखों यहूदी जो शहर और शेखिना के शिविर के भीतर के क्षेत्र में थे, उनमें सभी को जगह नहीं मिल सकती थी। इज़राइल के दरबार में अनगिनत पुरुष भरे हुए थे (देखें एम्डब्लु – दूसरे मंदिर का आरेख) और कई महिलाओं ने उनके दरबार के ऊपर स्थित दीर्घाओं से पानी डालने का जश्न मनाया। ये शानदार दीर्घाएँ दावत के दिनों में बड़ी सभाओं में विशेष रूप से महिलाओं के लिए आरक्षित थीं। इसमें महिलाओं को महिलाओं के दरबार और शखिना के शिविर दोनों में पूजा गतिविधियों का उत्कृष्ट दृश्य दिखाई दिया। लेकिन महिलाओं के दरबार के भीतर भी पुरुषों और महिलाओं की एक बड़ी भीड़ थी। .

याजकों के दरबार के अंदर: एक बार विभाजन की विभाजनकारी दीवार के अंदर (प्रेरितों के काम Cn पर मेरी टिप्पणी देखें – जेरूसलम में याकूब और बुजुर्गों से पॉल की सलाह) और चेल की सीढ़ियों तक, मुख्य याजक, अपने सुनहरे पानी के घड़े के साथ, उपासकों की भीड़ से अलग हो गया और जल द्वार से प्रवेश किया, जो उनमें से एक था अभ्यारण्य के किनारे के दक्षिण अंतरतम प्रांगण में तीन प्रवेशद्वार (किंडलिंग फाटक और फर्स्टलिंग्स के फाटक के साथ)। वहाँ एक और याजक जो पेयबलि के लिये दाखमधु ले गया था, उसके साथ हो लिया। तब दोनों याजकों एक साथ गए और पीतल की वेदी की सीढ़ियों पर चढ़ गए और बाईं ओर मुड़ गए। वे दो चाँदी के फ़नल तक पहुँचे, एक पूर्व की ओर (जो कुछ हद तक चौड़ा था) और एक पश्चिम की ओर, जिसमें संकीर्ण उद्घाटन कांस्य वेदी के आधार तक जाता था। पूर्व की ओर के फ़नल में शराब डाली जाती थी, और साथ ही, पश्चिम की ओर की कीप में पानी डाला जाता था। पानी डालने के बाद, लोग उस दिन आखिरी बार सोने का घड़ा उठाने के लिए याजक को बुलाते थे, ताकि खुद देख सकें कि मुख्य याजक ने हर आखिरी बूंद पानी डाल दी थी।

पर्व के पहले छह दिनों के दौरान, प्रत्येक सुबह एक अलग याजक मंदिर से सिलोम के पूल तक मार्च करेगा और केवल एक बार पानी डालने के लिए कांस्य वेदी पर वापस आएगा। लेकिन सातवें दिन, उन्होंने महान हालेल का पाठ करते हुए सात यात्राएँ कीं।

Gp – पर्व के अंतिम और महानतम दिन पर युहन्ना ७:३७-५२ | 5

उपासकों ने हालेल गाया और जैसे ही पानी डाला गया, उन्होंने अपनी ताड़ की शाखाओं को हिलाया (जैसे कि उन्होंने अपने झोंपड़ी की नाईं बनाने के लिए इस्तेमाल किया था) विजय में। इसी तरह, पहले छह दिनों के दौरान, बड़ी संख्या में तीर्थयात्रियों ने जेरिको पर कब्ज़ा करने की याद में केवल एक बार संगीत और जयकारों के साथ यरूशलेम के चारों ओर मार्च किया (यहोशू ६:२१)। हालाँकि, सातवें दिन, उन्होंने भजन ११८ का पाठ करते हुए यरूशलेम के चारों ओर सात यात्राएँ कीं।

रब्बियों ने सिखाया कि जल का उंडेला जाना पवित्र आत्मा के उंडेले जाने का प्रतीक है क्योंकि तल्मूड स्पष्ट रूप से कहता है: इसका नाम “जल का उंडेला जाना” क्यों कहा जाता है? रुआच हाकोदेश के उंडेले जाने के कारण, जैसा कहा गया है, “तू आनन्द से उद्धार के सोतों से जल निकालेगा।” इसलिए, यह पर्व और इसका विशेष आनंद “पानी निकालने” के समान है। क्योंकि रब्बी के अधिकारियों के अनुसार, रुआच हाकोडेश केवल आनंद के माध्यम से मनुष्य में निवास करता है।

उस दिन सातवीं और आखिरी बार पानी डालने के तुरंत बाद, बांसुरी की संगत में भजन ११३ से ११८ तक के महान हालेल का जप किया गया। जैसे ही लेवियों ने प्रत्येक भजन की पहली पंक्ति गाई, लोगों ने इसे दोहराया और फिर बड़े उत्साह के साथ उत्तर दिया: प्रभु की स्तुति करो। लेकिन जब वे उस दिन सातवीं बार भजन ११८ तक पहुँचे, तो लोगों ने न केवल भजन ११८:१ की पहली पंक्ति दोहराई: प्रभु का धन्यवाद करो, क्योंकि वह अच्छा है, बल्कि ये भी कहा: तू [हमारा] उद्धार बन गया है (भजन ११८:२१ सीजेबी) और कृपया प्रभु, हमें बचाएं! कृपया, प्रभु, हमें बचाएं (भजन ११८:२५ सीजेबी), और फिर, भजन के अंत में: प्रभु को धन्यवाद दें, क्योंकि वह अच्छा है, क्योंकि उसकी कृपा हमेशा बनी रहती है (भजन ११८:२९ सीजेबी)। जैसे ही उन्होंने इन पंक्तियों का उच्चारण किया, विलो की शाखाओं से सभी पत्तियाँ हिल गईं, जो उनके हाथों में थीं, और ताड़ की शाखाओं को टुकड़ों में तोड़ दिया गया, मानो प्रभु को उनके वादों की याद दिलाने के लिए। यह तब हुआ जब लोगों का उत्साह अपने उच्चतम स्तर पर पहुंच गया। आवाज़ का उतार-चढ़ाव। रब्बी सिखाते हैं कि जिसने भी पानी के उंडेले जाने का आनंद नहीं देखा है, उसने अपने जीवन में कभी भी आनंद का अनुभव नहीं किया है (बीटी सुक्खा ५१ए)।

फिर सत्तर बैलों की विशेष बलि की तैयारी के लिए एक छोटा सा विराम लगा। चूँकि लोगों ने अपने फेफड़ों के शीर्ष पर अनंत काल तक जप किया था, (संख्या Fg पर टिप्पणी देखें – हग सुकोट भेंट) जब उन्हें मौका मिला, तो वे सभी भावनाओं से थककर जमीन पर गिर पड़े। मौन के उस क्षण में, यीशु खड़े हुए और दृढ़ विश्वास से भरे हुए, इतने तीव्र स्वर में कि हर किसी को सुनाई दे, कहा: जो कोई भी प्यासा हो वह मेरे पास आए और पीए। मसीह ने दावत में विघ्न नहीं डाला, क्योंकि वह एक क्षण के लिए रुका था, परन्तु उसने उसे पूरा किया। जो कोई मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्रशास्त्र में कहा गया है, उसके भीतर से जीवन के जल की नदियाँ बह निकलेंगी (यूहन्ना ७:३७बी-३८)।

Gp – पर्व के अंतिम और महानतम दिन पर युहन्ना ७:३७-५२ | 6

क्या हम सभी को यहोवा के जलाशय से नियमित घूंट की आवश्यकता नहीं है? अनगिनत स्थितियों में – तनावपूर्ण बैठकें, अकेलापन, वित्तीय परेशानियाँ, रिश्तों की समस्याएँ, चिल्लाते बच्चे, मालिकों की माँग – दिन में कई बार, हम परमेश्वर के भूमिगत झरने की ओर कदम बढ़ा सकते हैं। और वहां, हम बार-बार अपने पाप और मृत्यु से मुक्ति, उसकी आत्मा की ऊर्जा, उसका आधिपत्य और हाँ – उसका प्रेम प्राप्त कर सकते हैं। आपको निर्जलित आत्मा के साथ नहीं रहना है। आपको शराब पीने के लिए अमीर होना, पीने के लिए धार्मिक होना या पीने के लिए सफल होना ज़रूरी नहीं है; आपको बस निर्देशों का पालन करना होगा कि क्या – या बेहतर, किसे – पीना है। येशुआ हा- मशियाच। पानी जो करता है उसे करने के लिए, आपको उसे अपने हृदय में प्रवेश करने देना चाहिए। गहरे, गहरे अंदर उसे आंतरिक करें। अपने जीवन के आंतरिक कामकाज में उसका स्वागत करें। गहराई से और बार-बार पियें। . . और तुझ में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी।

इससे उसका तात्पर्य आत्मा से था, जिसे उस पर विश्वास करने वालों को बाद में प्राप्त होना था। उस समय तक पवित्र आत्मा नहीं दिया गया था, क्योंकि यीशु को अभी तक महिमा नहीं मिली थी (यूहन्ना ७:३९)। रब्बियों ने इस समारोह की व्याख्या इज़राइल के अंतिम दिनों में रुआच हाकोडेश के उत्थान के प्रतीक के रूप में की। फरीसियों ने स्वयं इसे रुआच हाकोडेश के कार्य से जोड़ा। रूथ रब्बा चतुर्थ की पुस्तक में कहा गया है, “और इसे ‘उंडेलना’ क्यों कहा जाता है? क्योंकि उन्होंने वहां रुआच हाकोडेश को उंडेला, जैसा लिखा है: और प्रसन्नता के साथ तुम मुक्ति के झरनों से पानी निकालोगे।“ पानी खींचने और रुआच को बाहर निकालने के बीच का संबंध भविष्यद्वक्ता के वादे के माध्यम से सबसे आसानी से देखा जा सकता है: क्योंकि मैं प्यासी भूमि पर जल और सूखी भूमि पर जलधाराएं बहाऊंगा; मैं तेरे वंश पर अपनी कृपा उंडेलूंगा, और तेरे वंश पर अपनी आशीष उंडेलूंगा (यशायाह ४४:३ सीजेबी)। जबकि बहुत से लोग उस पर विश्वास करने लगे, पवित्र आत्मा सप्ताहों के पर्व तक विश्वासियों में स्थायी रूप से निवास नहीं करेगा (प्रेरितों २:१-१३)। इससे पहले, रुआच का निवास अस्थायी था। (प्रेरितों के काम Al देखें – रूआच हा’कोदेश शावुओत में आता है)

जब महिलाओं के दरबार में प्रभु यीशु मसीह के अत्यंत मार्मिक शब्द ज़ोर से बोले गए, तो भीड़ के बीच हंगामा मच गया। मसीहा के शब्दों ने सभी को एक निर्णय पर आने के लिए मजबूर कर दिया। क्या नाज़रीन वादा किया गया मसीहा था या नहीं? उसकी बातें सुनकर लोगों में से कुछ ने कहा, निश्चय यह मनुष्य भविष्यद्वक्ता है। (व्यवस्थाविवरण १८:१४-२२) दूसरों ने कहा: वह मसीहा है। फिर भी अन्य लोगों ने पूछा, “मसीहा गलील से कैसे आ सकता है? वे नहीं जानते थे कि उसका जन्म बेथलेहम में हुआ था क्योंकि उन्होंने मान लिया था कि उसका जन्म नाज़रेथ में हुआ था, और मेशियाक को वहाँ से नहीं आना चाहिए था। क्या तानाख यह नहीं कहता कि मसीहा दाऊद के वंशजों और बेथलहम (मीका ५:२) से आएगा, वह शहर जहां दाऊद रहता था?” इस प्रकार

Gp – पर्व के अंतिम और महानतम दिन पर युहन्ना ७:३७-५२ | 7

यीशु के कारण लोग विभाजित हो गये। यीशु के शब्द हमेशा लोगों को दो समूहों में विभाजित करते हैं: वे जो उस पर विश्वास करते हैं और वे जो उस पर विश्वास नहीं करते हैं। बीच का रास्ता तुरंत गायब हो जाता है। कुछ लोग उसे पकड़ना चाहते थे, लेकिन किसी ने उस पर हाथ नहीं डाला (यूहन्ना ७:४१-४४)। उसे मारने का हर प्रयास विफलता में समाप्त हुआ।

जब धार्मिक अधिकारियों ने मसीह की शिक्षा सुनी तो उन्हें गिरफ्तार करने के लिए मंदिर के रक्षकों को भेजा था। आख़िरकार वे सदूकियों और फरीसियों के पास वापस गए, जिन्होंने उनसे पूछा, “तुम उसे अंदर क्यों नहीं लाए?” उन्होंने उत्तर दिया, “किसी ने कभी इस प्रकार बात नहीं की जैसी यह मनुष्य बोलता है” (यूहन्ना ७:४५-४६)। वे नहीं जानते थे कि वह क्या कह रहा था, लेकिन वे बहुत प्रभावित हुए। लब्बोलुआब यह था कि वे खाली हाथ लौट आए। मसीहा की शिक्षा रब्बियों की केवल परंपरा की निरंतर अपील से भिन्न थी (देखें Ei– मौखिक ब्यबस्था)। इस प्रकार, सभी को यह प्रतीत हुआ कि उनका संदेश सीधे स्वर्ग से आया था क्योंकि उन्होंने एक ऐसे व्यक्ति के रूप में शिक्षा दी जिसके पास अधिकार था, न कि टोरा-शिक्षकों के रूप में (मती ७:२९)।

“तुम्हारा मतलब है कि उसने तुम्हें भी धोखा दिया है?” फरीसियों ने प्रत्युत्तर दिया। दूसरे शब्दों में, “तुम इतने मूर्ख क्यों हो?” “क्या शासकों या फरीसियों में से किसी ने उस पर विश्वास किया है? नहीं! परन्तु यह भीड़ जो तोरा के विषय में कुछ नहीं जानती, उन पर श्राप है” (यूहन्ना ७:४७-४९)। महत्वपूर्ण धार्मिक अधिकारी, हालांकि टोरा में प्रशिक्षित थे, जो प्रेम सिखाता है, न केवल भूमि के लोगों का तिरस्कार करते थे, बल्कि उनकी शिक्षा की कमी के कारण उन्हें अभिशाप के तहत भी मानते थे। वास्तव में, फरीसी कह रहे थे कि केवल आम , अशिक्षित लोग जो तनाख को नहीं जानते थे वे इस उपद्रवी रब्बी पर विश्वास करेंगे। लेकिन उनकी प्रतिक्रिया के साथ समस्या यह थी कि उनके स्वयं के महासभा सदस्यों में से एक ने मसीहा में विश्वास की ओर बढ़ना शुरू कर दिया था।

निकोडेमस, जो पहले यीशु के पास गए थे और जो उन्हीं में से एक थे, ने उन्हें याद दिलाया कि किसी की भी निंदा करने से पहले एक पूर्ण और खुली सुनवाई की मांग की गई थी (देखें Lh– परीक्षणों के संबंध में महान महासभा के कानून)। उन्होंने कहा: क्या हमारा टोरा किसी व्यक्ति को पहले सुने बिना यह पता लगाए कि वह क्या कर रहा है, उसकी निंदा करता है (यूहन्ना ७:५०-५१)? निकोडेमस महान महासभा (Lg– महान महासभा देखें) या शासक परिषद का सदस्य था। वह एक रब्बीनिक अकादमी के शिक्षक थे और फरीसियों की पार्टी से संबंधित थे। इससे पहले उसने रात में अकेले ही प्रभु की खोज की थी (देखें Bv– यीशु निकुदेमुस को सिखाता है)। नए जन्म के विषय में गुरु की शिक्षा ने स्पष्ट रूप से उसके हृदय पर प्रभाव डाला था। इसलिए यहां, उन्होंने महासभा की अपनी न्यायिक प्रक्रिया के गंभीर उल्लंघन पर सवाल उठाने का साहस किया।

Gp – पर्व के अंतिम और महानतम दिन पर युहन्ना ७:३७-५२ | 8

परिणामस्वरूप, निकोडेमस के साथी फरीसी हमले पर उतर आए। उन्होंने उसका मज़ाक उड़ाते हुए कहा: क्या तुम भी गलील से हो? इस पर गौर करो, और तुम पाओगे कि कोई भविष्यवक्ता गलील से नहीं आता (यूहन्ना ७:५२)। एक यहूदी को गैलीलियन कहना परम अपमान था। असल में, वे कह रहे थे, “क्या तुम भी उनकी तरह मूर्ख हो?” हालाँकि, यदि सच्चाई जानी जाए, तो होशे, योना और एलीशा सभी गलील से थे। लेकिन चूँकि गलील में कोई रब्बीनिक स्कूल नहीं थे, इसलिए रब्बियों का मानना था कि सभी गलीलवासी अशिक्षित थे। प्रसिद्ध रब्बी हिलेल ने एक बार कहा था कि सामान्य, अनपढ़ लोग कभी भी धार्मिक नहीं हो सकते।

यीशु के लिए यरूशलेम शेरों की गुफा थी। उसने स्वेच्छा से इसमें प्रवेश किया, फिर चतुराई से एकांत की सुरक्षा और सार्वजनिक क्षेत्र की सुरक्षा के बीच चला गया, जबकि अपने दुश्मनों के क्रोधित जबड़े को बंद करने के लिए अपने पिता पर भरोसा किया। उसका समय अभी तक नहीं आया था (यूहन्ना ७:६ए केजेबी) और अभी भी कई महीने दूर था। इस बीच बहुत काम किया जाना था – इसका अधिकांश भाग यहूदिया में था।